8 मुंबई की बरसात

मुंबई की बरसात का कोई ठिकाना नहीं होता। बिना किसी पूर्वानुमान के बरसात यकायक शुरू हो जाती है, यकायक ही बंद भी हो जाती है। यह उपन्यास-अंश उस बरसात का हाल बयान करता है, जिसने समुद्र से सटे इलाके में त्राहि-त्राहि मचाने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी।

बारिश थमने का नाम नहीं ले रही थी। कम हो जाती, फिर तेज़ हो जाती। दरवाज़े पर ताला पड़ा था। मतलब कोई आया नहीं। न गौतम आया, न कोपर, न कोई और। किसी तरह ताला खोला। दरवाज़ा खोलकर अँधेरे में स्विच टटोला। ऑन किया तो कोई असर नहीं हुआ। स्विच को कई बार ऊपर-नीचे किया। कुछ नहीं हुआ। अचानक समझ में आया कि बिजली गायब है।

दरवाज़े से झाँककर बाहर देखा। पूरी बस्ती अँधेरे में डूबी हुई थी। बरसते पानी में खौफ़नाक लग रही थी। लहरों के हरहराने की आवाज़ें बार-बार गूँज रही थीं। हवाएँ भी चीख रही थीं। रह-रहकर बादल गरज उठते थे। टिन की छत पर बरसते हुए पानी की तड़-तड़ का शोर भी होड़ में शामिल था। मैं समझ नहीं पा रहा था कि क्या करूँ? किसी पड़ोसी को जगाया नहीं जा सकता था। किसी से कोई खास जान-पहचान भी नहीं थी अब तक। सवाल था कि क्या कोई मोमबत्ती, दीया या लालटेन कुछ भी है! जवाब साफ़ था। कुछ भी नहीं है।

पतले से गद्दे पर दरी डालकर मैंने अपना बिस्तर तैयार कर लिया था। अपने जिस्म के सारे गीलेपन को पोंछकर और लुंगी लपेटकर जब बिस्तर पर पहुँचा, तो लगा कि कई जगह से गीला है। टिन शायद टपक रही थी। दो-तीन बार बिस्तर को इधर-उधर खींचकर मैंने सो जाने की कोशिश की। बहुत जल्द हलकी-हलकी नींद ने आ घेरा।

मैं दोपहर तक सोता रहा। एड़ियों और पिंडलियों को अचानक ठंडे-ठंडे पानी ने छूना शुरू कर दिया। मैं उठकर बैठ गया। मेरी नींद पूरी तरह भाग गई। बारिश में कोई कमी नहीं हुई थी। झटपट बिस्तर समेटना पड़ा। कुछ किताबें, लिखे-अधलिखे कागज़ थे। रोज़ाना पहने जानेवाले दो-चार कपड़े। मैंने सबको एक तरफ़ कर दिया लेकिन वक्त नहीं था। बाहर का पानी अंदर फैल रहा था। देखते-देखते सारी खोली में फैल गया।

किसी तरह दरवाज़ा खोल दिया। बस्ती के चारों तरफ़ पानी था। छोटा-मोटा तालाब बन गया था। आने-जानेवाला कोई दिखाई नहीं पड़ रहा था। चारों तरफ़ एक तरह की खामोशी थी। सिर्फ़ बाहर आँधी और समंदर की आवाज़ थी। छोटे-छोटे घर काफ़ी कुछ डूब गए थे। दूसरे छोर के दोमंज़िले मकान की ऊपरी मंज़िल पर भरे हुए लोग बिलकुल चुप थे। बढ़े हुए पानी को निहार रहे थे।

मैंने पतला-सा बिछौना बगल में दबाया। किताबें, कागज़ और कपड़े पेटी में रख लिए। एक बार मन हुआ इसी तरह पानी भरे रास्ते पर निकल चलूँ। लेकिन जल्दी ही समझ में आ गया कि पानी बहुत ऊँचा है। आगे गली में पहुँचते-पहुँचते कंधे तक आ जाएगा। तेज़ बहाव में चलना मुश्किल हो जाएगा। चुपचाप बढ़ते हुए पानी को देखता रहा। चाय की पतीली पानी में तैरने लगी। प्लास्टिक का मग और एल्यूमीनियम के डिब्बे भी बहने लगे। मुझे लगा मैं पूरी तरह फँस गया हूँ। कहीं और जाने का कोई रास्ता नहीं है। खड़े रहना है या एक कोने से दूसरे कोने में खिसकते जाना है।

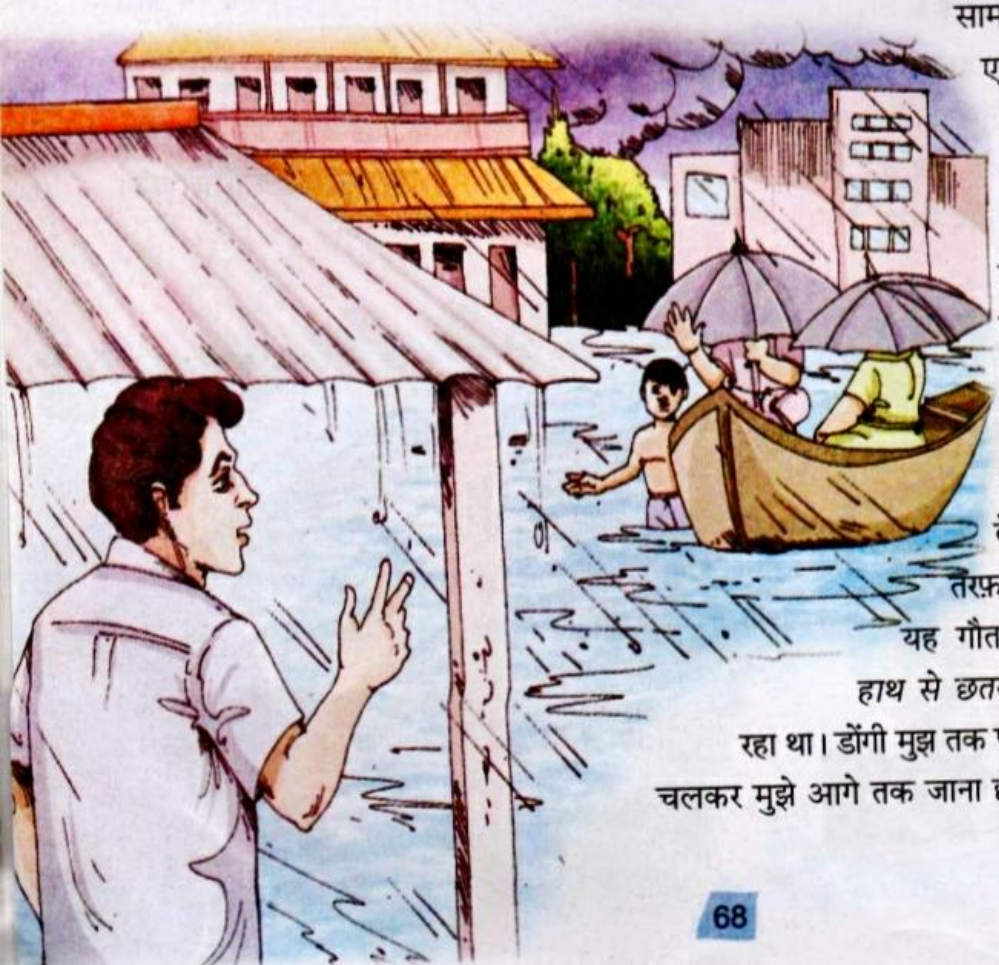

सामने नज़र उठाई तो देखा कि एक डोंगी नज़दीक आती जा रही थी। डोंगी के अंदर दो-तीन लोग छतरियों को जिस्म से सटाकर, तेज़ हवाओं और तिरछी बौछारों से बचने की कोशिश कर रहे थे। एक अधनंगा लड़का पानी में भीगता, डोंगी को दाएँ-बाएँ कर रहा था। मैंने देखा एक हाथ बार-बार मेरी तरफ़ हिल रहा है। मैं पहचान गया। यह गौतम पाल का हाथ था। एक हाथ से छतरी सटा, दूसरे से इशारा कर रहा था। डोंगी मुझ तक पहुँच नहीं सकती थी। पानी में चलकर मुझे आगे तक जाना होगा।

मैंने हिम्मत बटोरकर पानी में चलना शुरू कर दिया। पानी ठंडा था, धार तेज़ थी, बौछारें और हवाएँ भी तेज़ थीं। लगा कि पाँव काँप रहे हैं। किसी भी अगले कदम पर उखड़ जाएँगे। लेकिन मैं देखता रह गया। गौतम अचानक पानी में उतर गया। छतरी को अपने आपसे चिपकाए, पैरों से टटोल-टटोलकर कदम रखता, धीरे-धीरे मेरी तरफ़ बढ़ने लगा।

मैं किसी तरह डोंगी पर पहुँच गया। एक बार लगा कि चढ़ते-चढ़ते डोंगी पलट जाएगी। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। पानी में तरबतर हम लोग वहाँ से गुज़रने लगे जहाँ चर्च के अंदर से झाँकते हुए लोग दूर से हमें देख रहे थे। गाँव और देवी का मंदिर डोंगी की बाईं तरफ़ था, पानी में आधा डूब गया था। डोंगी में पानी भरता जा रहा था। एक छतरीवाला बालटी से पानी को बाहर उलीचता जा रहा था। समझ में नहीं आ रहा था कि कहाँ किनारा खत्म होता है, कहाँ सागर शुरू हो जाता है।

दूर पर एक टेकड़ी थी। बहुत-से लोग भागकर वहीं जमा हो गए थे। टेकड़ी पर कोई साया नहीं था। भीगते जाने के अलावा कोई चारा नहीं था। गौतम ने छतरी मुझे थमा दी थी, खुद बरसते पानी में खड़ा हो गया था। यह ज़रूरी भी था। यह भी ज़रूरी था कि छतरी को मैं पूरी तरह जिस्म से सटा लूँ। कँपकँपी फिर भी जारी थी, लेकिन गौतम पर कोई असर नहीं था।

डोंगी अब कुछ और घरों के बगल से गुज़र रही थी। सब बैठी चालें थीं। दरवाज़े तीन-चौथाई पानी में डूब चुके थे। किसी आदमी के अंदर होने का सवाल ही नहीं था। डोंगीवाला फिर भी चीख रहा था, "अंदर कौन है, आओ, बाहर आओ।"

गौतम चीखकर बोला, "अरे तू पागल हो गया है। इस बारिश के शोर में तेरी आवाज़ कौन सुनेगा! और इतने पानी में अंदर होगा भी कौन!"

लेकिन इस समय पास की दूसरी डोंगी से चिल्लाकर कोई कुछ कह रहा था। आवाज़ समझ में नहीं आ रही थी। एक तरफ़ को इशारा करता हुआ हाथ ही दिखाई दे रहा था। इशारा साफ़ था। दूर किसी चाल की खपरैलों पर लोग बैठे हुए थे।

इस डोंगी में भरे हुए पानी को उलीचनेवाले ने पहले हाथ से इशारा किया, फिर चिल्लाकर कहा, "तुम लोग उधर जाओ। हम लोग बाड़े की तरफ़ जाकर वापस आते हैं।"

लगा कि दूसरी डोंगीवालों ने बात समझ ली। रास्ते अलग हो गए। दूसरी डोंगी तेज़ी से उधर बढ़ने लगी जहाँ खपरैलों पर बैठे लोग खड़े होकर हाथ हिला रहे थे। गौतम ने मेरी तरफ़ मुड़कर कहा, "बहुत ठंड लग रही है तुझे?"

मैंने मुसकराने की कोशिश की, लेकिन कँपकँपी की वजह से मुसकरा नहीं पा रहा था। आड़ी-तिरछी होती हुई डोंगी चली जा रही थी। मुझे नहीं मालूम था कि कहाँ जा रहे हैं। ऊँचे-ऊँचे पेड़ लगातार एक ही तरफ़ झुकते चले जा रहे थे। तेज़ हवाएँ उन्हें उठने ही नहीं दे रही थीं। लगता था कि सभी पेड़ टूटकर गिर जाएँगे और समंदर का पानी उन्हें बहा ले जाएगा।

लेकिन मछेरों के लड़के इस माहौल में भी बहुत खुश थे। छोटी-छोटी डोंगियाँ लेकर बाढ़ के पानी पर फैल गए थे। जाल फेंक रहे थे या बड़ी-बड़ी टोकरियाँ पानी में डुबा रहे थे। बहकर आई हुई मछलियाँ जालों और टोकरियों में फँस जाती थीं। फुदकती थीं तब तक, जब तक मर नहीं जाती थीं। डोंगियों में मछलियों के ढेर लगते जाते थे।

मैं कँपकँपी पर काबू पाने की कोशिश कर रहा था। किसी तरह बोला, "अच्छा हो गया यार कि तू आ गया। नहीं तो क्या होता मालूम नहीं।"

गौतम कुछ नहीं बोला। जैसे कुछ कहना चाह रहा है लेकिन कह नहीं पा रहा है। अपनी आवाज़ मुझे अजीब लग रही थी। जैसे घिग्घी बँध रही हो या आवाज़ भर्रा गई हो। कँपकँपी को रोककर किसी तरह मैंने कहा, "हम लोग जा कहाँ रहे हैं यार?"

गौतम चारों तरफ़ नज़रें डाल रहा था। बोला, "तेरे के बाड़े में। उनका नाम है तेरे। पुराने लोग हैं यहाँ के। उनका बाड़ा काफ़ी बड़ा है और थोड़ी हाइट पर है।"

शायद शाम होने लगी थी। घने बादलों में कुछ पता नहीं चल रहा था। डोंगी ने हमें कुछ दूर छोड़ दिया। घुटनों तक पानी में चलकर हम 'तेरे' के बाड़े में पहुँचे थे।

— *जगदंबा प्रसाद दीक्षित*

उपन्यासकार परिचय : जगदंबा प्रसाद दीक्षित का जन्म सन 1935 में मध्यप्रदेश के बालाघाट में हुआ। लंबे अरसे से मुंबई में रहकर साहित्य-सृजन और पत्रकारिता कर रहे हैं। इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं : *मुरदाघर, इतिवृत्त, कटा हुआ आसमान* (उपन्यास) और *शुरुआत तथा अन्य कहानियाँ*।

पाठ मूल्यांकन

अभ्यास

शब्दार्थ

थमना - रुकना; **निहारना** - देखना; **बिछौना** - बिछाने का कपड़ा; **डोंगी** - अस्थायी नाव; **तरबतर** - पूरा भीगा हुआ; **उलीचना** - नाव, हौदी आदि में पानी भर जाने पर उसे किसी बरतन या हाथ से बाहर फेंकना **टेकड़ी** - ऊँची भूमि; **खपरैल** - मिट्टी का पकाया हुआ टुकड़ा जिससे छत को ढका जाता है;

Skills/Learning on this Page: • **Word Power** • **जीवन-मूल्य** - दूरदर्शिता, आपदा-प्रबंधन, सहयोग की भावना, भाईचारा

पाठ-बोध

मौखिक

प्रत्येक 1 अंक

1. बिजली के गायब होने का पता कैसे चला?
2. लेखक किसी पड़ोसी से मदद क्यों नहीं माँग पा रहा था?
3. लेखक को कैसे बिस्तर पर सोना पड़ा?
4. पानी भरता देख लेखक मन ही मन क्या सोचता रहा?
5. लोग कहाँ-कहाँ शरण लिए हुए थे?

लिखित

अर्थ-ग्रहण संबंधी प्रश्न Comprehension

दिए गए गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए— *प्रत्येक 1 या 2 अंक*

एक तरफ़ को इशारा करता हुआ हाथ ही दिखाई दे रहा था। इशारा साफ़ था। दूर किसी चाल की खपरैलों पर लोग बैठे हुए थे। इस डोंगी में भरे हुए पानी को उलीचनेवाले ने पहले हाथ से इशारा किया, फिर चिल्लाकर कहा, "तुम लोग उधर जाओ। हम लोग बाड़े की तरफ़ जाकर वापस आते हैं।"

लगा कि दूसरी डोंगीवालों ने बात समझ ली। रास्ते अलग हो गए। दूसरी डोंगी तेज़ी से उधर बढ़ने लगी जहाँ खपरैलों पर बैठे लोग खड़े होकर हाथ हिला रहे थे। गौतम ने मेरी तरफ़ मुड़कर कहा, "बहुत ठंड लग रही है तुझे?"

मैंने मुसकराने की कोशिश की, लेकिन कँपकँपी की वजह से मुसकरा नहीं पा रहा था। आड़ी-तिरछी होती हुई डोंगी चली जा रही थी। मुझे नहीं मालूम था कि कहाँ जा रहे हैं। ऊँचे-ऊँचे पेड़ लगातार एक ही तरफ़ झुकते चले जा रहे थे। तेज़ हवाएँ उन्हें उठने ही नहीं दे रही थीं। लगता था कि सभी पेड़ टूटकर गिर जाएँगे और समंदर का पानी उन्हें बहा ले जाएगा।

1. हाथ से क्या इशारा किया जा रहा था?

.....

2. दोनों डोंगियों के रास्ते अलग क्यों हो गए?

.....

3. गौतम ने लेखक से क्या पूछा?

.....

Skills/Learning: • **Verbal Expression** • **Comprehension** – reasoning, identification, thinking

4. तेज़ हवाओं का क्या प्रभाव पड़ रहा था?

.....

दीर्घउत्तरीय प्रश्न Long Answer Questions

प्रत्येक 3 अंक

1. घर के भीतर पानी भर जाने का अहसास लेखक को कब हुआ?
2. पानी भरता देख लेखक ने क्या किया?
3. डोंगी में कौन था? उसने लेखक को पानी से कैसे निकाला?
4. डोंगीवाले पानी में फँसे लोगों की मदद कैसे कर रहे थे?
5. नाव में पानी भर जाने पर सवारियों ने क्या किया?
6. घनी बारिश में आपके आस-पास कैसी स्थिति बन जाती है? अपने शब्दों में लिखिए। M.I. *4 अंक*

व्याकरण-बोध

1. नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़िए—

क. विलियम प्रतिदिन दो घंटे खेलता है।

ख. जुबैदा के द्वारा पुरस्कार बाँटे गए।

इन दोनों वाक्यों को अलग-अलग ढंग से कहा गया है। पहला वाक्य कर्ता (subject) प्रधान है क्योंकि क्रिया सीधे कर्ता 'विलियम' के द्वारा की जा रही है परंतु दूसरे वाक्य में क्रिया 'बाँटे गए' कर्म 'पुरस्कार' पर आश्रित है।

क्रिया के जिस रूप से यह पता चलता है कि क्रिया-व्यापार का मूल संचालक कर्ता, कर्म या भाव है, उसे वाच्य कहते हैं। वाच्य का अर्थ है—कहने का ढंग या प्रकार।

इस आधार पर **वाच्य दो प्रकार के हैं—कर्तृवाच्य** और **कर्मवाच्य।**

कर्तृवाच्य—जिस वाक्य में क्रिया का लिंग और वचन कर्ता के अनुसार होता है, वहाँ कर्तृवाच्य होता है। जैसे — पहला वाक्य।

कर्मवाच्य—जिस वाक्य में क्रिया का लिंग और वचन कर्म के अनुसार होता है, वहाँ कर्मवाच्य होता है। जैसे — दूसरा वाक्य।

Skills/Learning: • Long answer questions, comprehension, reasoning, identification, describing, M.I.
• **Language** – voice, sorting

दिए गए वाक्यों में वाच्य पहचानकर उनके सामने कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य लिखकर उन्हें दूसरे वाच्य में बदलें— *प्रत्येक 1 अंक*

क. रवि वर्मा ने सुंदर चित्र बनाए। .....

ख. प्राचार्या द्वारा भाषण दिया गया। .....

ग. सईदा कंप्यूटर सीखती है। .....

घ. बॉस द्वारा आदेश दिया गया। .....

ङ मीना सवेरे उठकर पढ़ती है। .....

च. माँ रसोईघर में खाना पकाती हैं। .....

2. 'ही' के प्रयोग पर ध्यान दीजिए—

क. उसके आते ही मैं चला गया।

ख. हम तो अपना धर्म निभाएँगे ही।

ही अव्यय है, इसे **निपात** भी कहते हैं। निपात किसी शब्द या पद के बाद लगकर उसके अर्थ में विशेष बल ला देते हैं। जैसे—**ही, भी, तो, मात्र** निपात कहे जाते हैं। यहाँ **ही** के अर्थ और उसके प्रयोग दिए जा रहे हैं।

क. 'ही' के द्वारा निश्चय सूचित होता है। जैसे—आखिर तुम आ ही गए।

ख. बल देने के लिए 'ही' का संयोग। जैसे—अब + ही = अभी, कब + ही = कभी

ग. सामान्य भविष्यतकाल में। (कुछ क्रोध और अनमने भाव में)

जैसे—मुझे भेजकर ही मानोगे। मैं तो जाऊँगा ही।

घ. नकारात्मक अर्थ में भी। जैसे—

i. एवरेस्ट बहुत ऊँचा है, तुम शायद ही चढ़ पाओ।

ii. तुम शायद ही यह काम कर पाओ।

ङ 'ही' निपात का प्रयोग करके पाँच वाक्यों का निर्माण कीजिए— *प्रत्येक 1 अंक*

i. .....

ii. .....

iii. .....

iv. .....

v. .....

3. **नीचे लिखे वाक्य पढ़िए—**

क. दूसरों को संकट <u>या</u> आपदा से बचाना ही साहस है।

ख. अध्यापक हमें यह बता रहे थे <u>कि</u> पक्षी कैसे उड़ता है।

इन वाक्यों में रेखांकित शब्द दो शब्दों या दो वाक्यों को जोड़ रहे हैं। इन्हें **योजक** या **समुच्चयबोधक अव्यय** कहा जाता है। कुछ योजक जोड़ने का कार्य करते हैं। जैसे—**और, तथा, एवं** तो कुछ **परिणामदर्शक** होते हैं। जैसे—**इसलिए, अतएव, कि, अतः** और **क्योंकि**। कुछ **विकल्प** बताने का कार्य करते हैं। जैसे—**या, अथवा**। कुछ शब्दों द्वारा **विरोध** का पता चलता है। जैसे—**पर, परंतु, किंतु, लेकिन, मगर, वरन, बल्कि।**

किन्हीं पाँच योजकों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाएँ— *प्रत्येक 1 अंक*

.....

.....

.....

.....

.....

विषय संवर्धन गतिविधियाँ

Subject Enrichment Activities

1. मुंबई और मुंबई जैसे समुद्र से सटे शहरों की जलवायु के बारे में **जानकारी जुटाइए।**
2. मुंबई को मायानगरी और आर्थिक राजधानी भी कहा जाता है। क्यों? **चर्चा करें।** *(मौखिक अभिव्यक्ति)*
3. बॉलीवुड में बनी फ़िल्मों में यदाकदा कई पात्र जो हिंदी बोलते हैं उसे **मुंबइया हिंदी** कहा जाता है। उनके द्वारा बोले गए कुछ वाक्य या **शब्दों का संग्रह कर उसी शैली में अभिनय कर सबको सुनाइए।** *(भूमिका निर्वहन)*
4. तकषि शिवशंकर पिल्लै की कहानी **बाढ़ में** और शिवप्रसाद सिंह की कहानी **कर्मनाशा की हार** खोजकर **पढ़िए।**
5. आप बाढ़ में घिर गए हैं या आपके देखते-देखते कुछ दूसरे लोग बाढ़ में घिर गए हैं। आप स्वयं को और दूसरों को कैसे बचाएँगे? कक्षा में खड़े होकर सबको बताइए या कॉपी में लिखिए।

Skills/Learning: • **Language** – conjunctions, formation of sentence • **S.E.A. – Creative Expression** – thinking, imagination, Verbal expression, (discussion), collecting information, Speaking Skills